शिया मज़हब

पर होने वाले एतेराज़ात के जवाबात

(अहले सुन्नत की किताबों की रौशनी में)

लेखक: शेख़ नज्मुद्दीन तबसी

अनुवादक: सय्यद अबरार अली जाफ़री (मंचरी)

नाशिर: अबू तालिब (अ.स) इंटरनॅशनल इस्लामिक इंस्टिट्यूट

www.ketab.ir

پاسخ به برخی شبهات مذهبی (هندی)
مولف: شیخ نجم الدین طبسی
مترجم: سید ابرار علی جعفری
انتشارات: دلیل ما
چاپ اول: پاییز ۱۳۹۴
تیراژ: ۱۰۰۰
چاپ: نگارش
شابک: ۹۷۸-۹۶۴-۳۹۷-۹۴۷-۸
تلفن: ۳۷۷۴۴۹۸۸-۳۷۷۳۳۴۱۳ (۰۲۵)
قم، صندوق پستی: ۳۷۱۳۵-۱۱۵۳
WWW.Dalilema.ir
Dalilema@yahoo.com

انتشارات دلیل ما

مراکز پخش:

۱) قم، خ معلم، مجتمع ناشران، طبقه همکف، واحد ۹، تلفن: (۱۰ خط) ۳۷۸۴۲۴۶۶
۲) قم، خ صفائیه، روبروی کوچه ۳۸، پلاک ۷۵۹، فروشگاه دلیل ما، تلفن ۳۷۷۳۷۰۱۱ - ۳۷۷۳۷۰۰۱
۳) تهران، خ انقلاب، خ فخررازی، فروشگاه دلیل ما، پلاک ۶۱، تلفن ۶۶۴۶۴۱۴۱
۴) مشهد، چهارراه شهدا، ضلع شمالی باغ نادری، کوچه شهید خوراکیان، مجتمع تجاری گنجینه کتاب، طبقه اول، فروشگاه دلیل ما، تلفن ۲۲۲۳۷۱۱۳-۵

سر شناسه	: طبسی، نجم‌الدین، ۱۳۳۴
عنوان قراردادی	: پاسخ به برخی شبهات مذهبی: اعتراض بر مذهب شیعه(هندی)
مشخصات نشر	: قم: دلیل ما، ۱۳۹۴
مشخصات ظاهری	: ۷۵ ص. ۱۴/۵×۲۱/۵ س‌م.
شابک	: ۹۷۸-۹۶۴-۳۹۷-۹۴۷-۸
وضعیت	: فیپا
یادداشت	: هندی
موضوع	: گریه - جنبه‌های مذهبی
شناسه افزوده	: جعفری، سیدابرارعلی، ۱۳۵۵ - مترجم
رده بندی کنگره‌ای	: BP۸ / ط۲۷پ۲۰۴۹۵۸۶ ۱۳۹۴
رده بندی دیویی	: ۲۹۷/۰۲
شماره کتابشناسی ملی	: ۳۹۸۱۴۴۸

www.ketab.ir

फ़ेहरिस्त (सूची)

हरफ़े नाशिर (संपादक की बात).....................................9

मुक़द्दमा-ए-मुअल्लिफ़ 12

सवाल नंबर 1: सबसे पहले किस शख़्स ने पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (स) की क़ब्रे मुबारक की ज़ियारत से रोका?..13

सवाल नंबर 2: क्या पैग़म्बर (स) की क़ब्रे मुबारक को मस करना या उस की ख़ाक को तबर्रुक के तौर पर उठाना जाएज़ है? और क्या सहाबा में से किसी ने ऐसा अमल अंजाम दिया?......................................14

सवाल नंबर 3: क्या मज़हब-ए-अरबाअ (चार मज़हब) के उलमा तबर्रुक, मिम्बरे मुबारक, क़ब्रे मुबारक, या दीगर औलिया-ए-ख़ुदा की क़ब्रों को मस करने को जाएज़ समझते हैं?...16

www.ketab.ir

सवाल नंबर 4: अहले सुन्नत के अपने बड़े बुज़ुर्गों की क़ब्र से तबर्रुक हासिल करने का एक नमूना बयान करें?..19

सवाल नंबर 5: क्या ग़ैरे ख़ुदा से हाजत तलब करना जाएज़ है?..20

सवाल नंबर 6: क़ब्र की ज़ियारत जायज़ होने की कौन सी दलील मौजूद है?..26

सवाल नंबर 7: क्या यह हदीस ((ला तशुद्दु अल रेहाल इल्ला इला सलासति मसाजिद)) क़ब्रों पर जाने से मना नहीं कर रही?...29

सवाल नंबर 8: क्या इस हदीस ((अल्लाह की लानत हो उन औरतों पर जो क़ब्रों की ज़ियारत करती है)) के बा वजूद औरतें क़ब्रों पर जा सकती हैं?...........32

सवाल नंबर 9: क्या अम्बिया अलैहिस्सलाम और औलिया-ए-किराम की क़ब्रों के पास खड़े होकर नमाज़ पढ़ना या दुआ करना जाएज़ है? 35

www.ketab.ir

सवाल नंबर 10: क्या यह हदीस ((ख़ुदा लानत करे यहूदियों पर कि उन्होंने अपने बड़ों की क़ब्रों को मस्जिद बना लिया)) इसी तरह यह हदीस ((परवरदिगार! मेरी क़ब्र को बुत क़रार ना देना)) क़ब्रे पैग़म्बर (स) और दूसरे क़ब्रों के पास नमाज़ पढ़ने या दुआ मांगने से मना नहीं कर रही? 37

सवाल नंबर 11: क्या इस्लामी शरीयत में क़ब्रों पर गुम्बद और ज़रीह वग़ैरा बनाने से मना किया गया है? 41

सवाल नंबर 12: क्या यह हदीस ((पैग़म्बर (स) ने क़ब्रों को पक्की बना कर उन पर इमारत बनाने से मना किया है)) रौज़ों को बनाने से मना नहीं कर रहीं है? 46

सवाल नंबर 13: क्या क़ब्रों पर चिराग़ वग़ैरा का रौशन करना शरई तौर पर मना है? 47

सवाल नंबर 14: क्या ज़िन्दा या मुर्दा औलिया अल्लाह के लिये मन्नत मानना जाएज़ है? 49

www.ketab.ir

सवाल नंबर 15: अज़ादारी और जश्ने मीलादुन्नबी (स) वग़ैरा के बारे में इस्लाम का क्या नज़रिया है?......52

सवाल नंबर 16: क्या अहले सुन्नत के उलमा भी मुतआ को जाएज़ समझते हैं?..............................55

सवाल नंबर 17: किसलिए शिया हज़रात हाथ बांधकर नमाज़ नहीं पढ़ते?..58

सवाल नंबर 18: नमाज़े तरावीह क्या है और किसलिए अहले सुन्नत इस की अदा करने पर इस क़दर पाबंद हैं?..61

सवाल नंबर 19: क्या बिदअत को अच्छी और बुरी दो क़िस्मों में तक़सीम किया जा सकता है और अच्छी बिदअत से मुराद क्या है?.......................................64

सवाल नंबर 20: वह रिवायात जिन में यह बयान हुआ है कि हज़रत अली (अ.स) नमाज़े तरावीह पढ़ा करते या उस के लिए इमाम मुक़र्रर करते, इन्हें नमाज़े तरावीह के बिदअत होने वाली रिवायात के साथ कैसे जमा किया जा सकता है?.......................................65

www.ketab.ir

सवाल नंबर 21: क्या यह जुमला ((अस्सलातो ख़ैरुम्मिनन नौम)) शुरू ही से अज़ान में मौजूद था या बाद में इज़ाफ़ा किया गया?..67

सवाल नंबर 22: क्या यह जुमला ((हय्या अला ख़ैरिल अमल)) अज़ान का हिस्सा है और इसे सहाबा व ताबिईन में से किसी ने पढ़ा है?...................................69

www.ketab.ir

बिस्मिल्ला हिर्रेहमा निर्रेहीम

हरफ़े नाशिर (संपादक की बात)

इस वक़्त दुनिया की आबादी का पाचवाँ हिस्सा मुसलमानों पर मुश्तमिल है पूरी दुनिया के गोशा व किनार में इस्लाम के पैरोकार आबाद हैं और कई एक ग़ैर इस्लामी देशों में भी मुसलमान मौजूद हैं जिन की इल्मी तिश्नगी को दूर करने के लिये एक ऐसे इदारे का क़याम ना गुज़ीर था जो इस्लाम से मुतअल्लिक़ पेश आने वाले एतेराज़ात और सवालात का इल्मी और तसल्ली बख़्श जवाब तैयार करके दुनिया के सामने पेश कर सके. जैसा कि वली-ए-अम्र मुस्लिमीन हज़रत आयतुल्लाह ख़ामेनई साहब ने भी इस बात की ताकीद फ़रमाई है कि "हमें इस बात का मुंतज़िर नहीं रहना चाहिये कि अवाम और जवानों के ज़हन में कोई शक या शुब्हा आये बल्कि हमें पहले ही से शुबहात के लिये तैयार रहना चाहिये और सरशार मनाबे से इस्तिफ़ादा करते हुए उन का जवाब देना चाहिये.

www.ketab.ir

इसी ज़रूरत को मद्दे नज़र रखते हुए अबू तालिब (अ.स) इंटरनॅशनल इस्लामिक इंस्टिट्यूट का इफ़तिताह किया गया ताकि जवानों की इल्मी तिश्नगी को दूर किया जा सके. अलहम्दु लिल्लाह इस राह में इदारे ने बहुत कामयाबी हासिल की और बहुत ही कम वक़्त में 40 से ज़ियादा मौज़ूआत पर मुश्तमिल सैकड़ों की तादाद में किताबें दुनिया के गोशा व किनार में मुफ़्त पहुँचाई और यह सिलसिला भी मोमिनीन के तआउन व मदद से जारी है. याद रहे कि यह इदारा बर्रे सग़ीर हिन्द व पाक का वह वाहिद इदारा है जो पूरी दुनिया में कई एक ज़बानों में मुफ़्त किताबे देने की ज़िम्मेदारी उठाए हुए है.

इस सिलसिले की एक कड़ी यह किताब है जिस में शिया मज़हब पर होने वाले एतेराज़ात से मुतअल्लिक़ कई एक शुबहात का इल्मी बुनियादों पर जवाब देने की कोशिश की गई है उमीद है कि पढ़ने वाले इस किताब से भरपूर फ़ायदा उठाएगे.

www.ketab.ir

इसी तरह तहे दिल से शुक्रिया अदा करता हूँ बरादरे अज़ीज़ जनाब सय्यद अबरार अली जाफ़री साहब (मंचरी) का कि जिन्होंने इस किताब का हिन्दी तर्जुमा करने की ज़हमत उठाई और यह किताब आप के हाथों में पहुँची.

वस्सलाम

बानी-ए-इदारा नाज़ीम हुसैन अकबर

15 शाबान 1436 (जून 2015)

www.ketab.ir